सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज

फरीदाबाद, दिनांक 03 दिसम्बर 2017

ये संसार दुखदाई क्यों है? इस संसार में कोई भी सुखी क्यों नहीं है। इस संसार को दुखदाई क्यों बताया गया है? असल में देखो तो संसार दुखदाई नहीं है। संसार हमको दुख नहीं देता है। ये हमारे अपने कर्म हैं, जो हमको दुख देते हैं। संसार क्या है? संसार है पेड़ पौधे, फल सब्जियाँ, विभिन्न प्रकार के फूल, पानी, हवा, पशु, पक्षी। इन्होने क्या बिगाड़ा है हमारा? लेकिन हम बिगड़ते हैं। क्योंकि हमारे अपने ही कर्म हमारे सामने आ जाते हैं। ये संसार मालिक ने बनाया। उसने हमारे लिए हजारों किस्म के फल बनाए, हजारो किस्म के भोजन बनाए, हवा, पानी बनाया। बहुत सुंदर–2 जगह बनाई, जहाँ पर हम घूमने जाते हैं। फिर आप कैसे कहते हैं कि संसार दुखदाई है? ये संसार दुखदाई नहीं है। ये हमारे अपने ही कर्म दुखदाई हैं। हम अंजाने में कहते हैं कि संसार दुखदाई है। ये अज्ञान है हमारा। जैसा हमने बोया पिछले जन्मों में, सारे जन्मों के कर्म इकट्ठा हो जाते हैं। आपैर हमारी आत्मा उन कर्मों को ढोती रहती है, और उन कर्मों को भुगतने के लिए शरीर ढूँढती रहती है। जैसा ही उसको शरीर मिल गया, वो उन कर्मों की टोकरी उस शरीर के हवाले कर देती है। हमारे जो कर्म हैं, ये एक जन्म के नहीं हैं। ना जाने कितने हजारों लाखों जन्म लिए हैं हमने। जब महाभारत खत्म हुआ, तो धृतराष्ट्र ने कृष्ण से पूछा मैं अंधा क्यों हूँ? तो भगवान कृष्ण ने कहा पिछले जन्मों में जाओ। वो 105 जन्म पीछे गया। उसने देखा वो एक कीड़े की आँख फोड़ रहा है। ये कर्म बन गया 105 जन्म पहले और फल कब मिला? 105 जन्म के बाद। इसी तरह हमारे साथ भी है, ये हमारे माता पिता, भाई बहन, ननद, देवरानी, ये सब अचानक नहीं बने। इनका हमारे साथ पिछले जन्मों में कोई ना कोई संबंध रहा है। और कोई ना कोई संबंध अधूरा रह गया। जो कि इस जन्म में संबंध पूरा करने आ गए। आत्मा का शरीर पहले से ही निर्धारित है कि किस शरीर में जाएगा। जिस शरीर में जाएगा, उसके संबंधी भी वहाँ पहुँच जाते हैं, रिश्ते निभाने के लिए। अगर आप उनके साथ रिश्ते नहीं निभाना चाह रहे हो तो आप और भी कर्म बना रहे हो। आपको इसी जन्म मे अपने सारे कर्म खत्म करने हैं, चाहे वो कर्म आपकी पत्नी के साथ हो, आपके चाहे बेटे बेटी के साथ हो, चाहे भाई के साथ हो। आप जो कर्मों की टोकरी साथ लाए हो, वो टोकरी खाली करनी है। अगर आप कर्मों से बचना चाहते हो तो आप और भी कर्म बढ़ा रहे हो। फिर से एक जन्म और। इसलिए कोशिश करो अपने सारे कर्म इसी जन्म में खत्म करो। ये जन्म हमको मिला ही है इसलिए। अगर हमारी टोकरी में एक भी कर्म नहीं होता, तो हमें फिर से शरीर मिलता ही नहीं। कर्म आत्मा को नहीं भोगना है, शरीर को भोगना है। अगर आपकी आत्मा पर एक भी कर्म बाकी नहीं है। तो फिर शरीर मिलेगा ही नहीं। उसी को मोक्ष बोलते हैं। कर्म खत्म, चलो अपने घर वापिस। फिर इस संसार में नहीं आना है। संसार में आने का मतलब कर्म बाकी रह गए और वो भुगतने है। आदमी रास्ते में चल रहा है, दुर्घटना हो जाती है। उसकी टाँग टूट जाती है। वो गालियाँ देता है, कोसता है संसार को। लेकिन कोसना किसको है? कोसना है अपने आपको। मेरे ही ऐसे कर्म थे, जो ये दुर्घटना हो गई। शरीर में रोग क्यों हो जाता है? कर्मों का भुगतान करना है। सब कुछ हमारे शरीर में ही है। सारी बीमारियाँ हमारे शरीर में ही हैं। कैंसर की बीमारी का बीज भी हमारे शरीर में ही है। जब कर्म भुगतना है तो बाहर आ जाता है। अगर हमारे कर्म ज्यादा खराब हो तो कैंसर का बीज बढ़ जाता है। जो कुछ भी है शरीर के अंदर ही है। इसको कहा गया है शरीरं व्याधि मंदिरं। ये शरीर बीमारियों का घर है। कौन सी बीमारी कब बाहर आएगी, ये हमारे कर्मों पर निर्भर है। भगवान ने सब इंतजाम कर रखा है। कबीर साहब कहते हैं भजन बिन बाबरे, तेने हीरा सा जन्म गंवाया। ये मनुष्य जन्म हीरा है, जो कुछ भी कर सकते हैं, इसी मनुष्य जन्म में ही कर सकते हैं। गुरू वशिष्ठ

ने एक सभा बुलाई। उस सभा में सभी ऋषि मुनियों को बुलाया। प्रश्न ये था कि सबसे उत्तम जन्म कौनसा है। किसी ने कुछ बताया, किसी ने कुछ बताया। फिर आखिर में वशिष्ठ जी ने ही उत्तर दिया। सबसे श्रेष्ठ जन्म है मनुष्य जन्म। हम कितने भाग्यशाली हैं कि हमको मनुष्य जन्म मिल गया। 84 लाखा योनियाँ पार करके मनुष्य जन्म मिलता है। मितने कष्ट पाकर मनुष्य जन्म मिलता है। मनुष्य में इतनी ताकत है कि वो सबकुछ कर सकता है। क्योंकि वो भगवान का ही बेटा है। उसको अपने आपको पहचानना है, बस। हमने अपने आपको पहचाना नहीं, इसलिए कबीर साहब रोते हैं। भजन बिन बाबरे, तेने हीरा सा जन्म गंवाया। क्यों? हमने अपने आपको पहचाना नहीं। हम वही हैं जिसकी तलाश में हम हैं। हम भगवान की तलाश में हैं, हम ही भगवान हैं। पहचानो अपने आपको, नही पहचाना तो, भजन बिन बाबरे, तेने हीरा सा जन्म गंवाया। अपने आपको पहचाना नहीं। हमारी पहचान कौन कराता है? हमारी पहचान गुरू ही कराएगा। एक शेर का बच्चा भेडों के झुण्ड़ में कहीं घुस गया। और मैं–2 करने लग गया। एक दिन शेरनी ने देखा, मेरा बच्चा है। पकड़ कर ले आई उसको। और पानी के पास ले गई, देख अपना चेहरा, तू मेरा जैसा है। शेरनी ने दहाड़ मारी, बच्चे ने भी दहाड़ मारी। सारे भेड़ भाग गए। उसको समझ आ गई, मैं कुछ और हूँ। मेरी एक ही दहाड़ से सारे भेड़ भाग गए, मैं भेड़ नहीं हूँ, मैं कुछ और हूँ। उसकी माँ ने पहचान कराई। तुम्हारी माँ कौन है? हमारी माँ गुरू है और गुरू ही हमारी पहचान कराता है। तुम कौन हो? तुम भेड़ नहीं हो। तुम शेर के बच्चे हो। और शेर का बच्चा शेर ही होता है। तो भाग्यशाली हैं वो लोग जो गुरू के पास जाते हैं। जिनको गुरू मिलता है, गुरू उनकी पहचान कराता है, तुम कौन हो? तुम भेड़ नहीं हो? तुम शेर हो। शेर का बच्चा जब बड़ा हो जाता है तो उसमें शेर की सारी ताकत आ जाती है। इसी तरह जब हम अपने आपको पहचान लेते हैं, तो हमारे अंदर जितनी शक्तियाँ भगवान में हैं, उतनी शक्तियाँ आ जाती हैं। भगवान ने यह कायनात बनाई अपनी शक्ति से, हम भी एक और नई कायनात खड़ी कर सकते है अपनी शक्ति से। विश्वामित्र ने बनाई थी नई कायनात। फिर उसको रोका, आप ऐसा मत करो। हम भी उन्हीं जैसे मनुष्य हैं। लेकिन उन्होने अपने आपको पहचान लिया था और उनकी सारी शक्तियाँ बाहर आ गई थीं। तो उसमें दूसरी कायनात खड़ी करने की ताकत थी। वही ताकत आप सबमें है, आप भी दूसरी कायनात खड़ी कर सकते हैं। लेकिन शर्त यह है कि अपने आपको पहचान लो। अगर तुम को यह जानना है कि भगवान कौन है? तुम अपने आपको पहचानों तुम कौन हो? तुमको अपने आप ही पता चलेगा, भगवान कौन है? क्योंकि दूसरा कोई है ही नहीं, सब एक ही है। और वही सब में है। '' नहीं रूप कोई हैं सब रूप तेरे''। भूप भी तू ही है और प्रजा भी तू ही है। तू ही राजा है और प्रजा भी तू ही है। कबीर साहब कहते हैं '' सतगुरू खोजो रे भाई, जगत में दुर्लभ रतन यही है''। अगर इस संसार में कोई दुर्लभ है, तो वो है एक सच्चा सतगुरू। एक सच्चा सतगुरू आपको सच्ची राह दिखाएगा। और एक सच्चा सतगुरू ही आपको तार लेगा। गुरू आता ही है तारने के लिए। स्वर्ग नरक सब तुम्हारे पास है। अब आपकी इच्छा है आपको क्या चाहिए? इस संसार में स्वर्ग भी है और नरक भी है। इस कलियुग में नाम की महिमा है। पहले युग में 10–10 हजार साल तपस्या करते थे। लेकिन मिलता कुछ नहीं था। फिर हवन यज्ञ करने लगे। हवन यज्ञ करके भी कुछ नहीं मिला हमको। फिर कलियुग आ गया। कलियुग में आ गया नाम। नाम है राधास्वामी की अवस्था। जब हमारी आत्मा (राधा) उस परमपिता (स्वामी) से मिल जाती है। वही है राधास्वामी की अवस्था। ये अवस्था आप कैसे पाओगे? नाम की भक्ति करके, आप ये अवस्था पाओगे। इस अवस्था को प्राप्त करना बहुत आसान है। सिर्फ अपने गुरू का ध्यान करो। आपका रास्ता खुद ही बनता जाएगा। अपने गुरू को 24 घण्टे मन में रखो। कोई जरूरत नहीं है 2–2घण्टे बैठने की। कलियुग में कोई 2 घण्टे नहीं बैठ सकता है। इसलिए कबीर साहब ने और भी सहज कर दिया उसको। साधो सहज समाधि भली। आप हर समय गुरू का ध्यान रखो। खाते

पीते, चलते सोते, चाहे जो भी काम करो, 24 घण्टे गुरू को ध्यान में रखो। यही है सहज समाधि। गुरू कहता है–

'' सब करनी मैं आप कराऊँ, पहुँचा दूँ धुर दरबारा।
तुमरी चिंता मैं मन राखी, तू अचिंत रह धरो प्यारा।।

तुम अपनी सारी चिंताएँ मुझे दे दो और मुझसे प्रेम करो। बहुत आसान तरीका है। ये काम कलियुग में ही हो सकता है। गुरू को चिंताएँ देने का मतलब है, आप पर जब भी कोई मुश्किल आ जाए, गुरू को बताओ। गुरू कहेगा, जा बेटा कुछ नहीं होगा तुम्हारा। निश्चिंत हो गए ना आप? आपने अपनी चिंताएँ गुरू को दे दी। ऐसे होता है अपनी चिंताएँ गुरू को देना। फिर धरो प्यारा, और अपने गुरू से प्रेम करो। जब आप गुरू से प्रेम करोगे, तो 24 घण्टे आपको गुरू का ध्यान रहेगा। और जब आपको 24 घण्टे गुरू का ध्यान रहेगा, तो आपको कभी नकारात्मक विचार आएगा ही नही। क्योंकि वहाँ जगह ही नहीं होगी, वहाँ पहले ही गुरू बैठा होगा। और जब आपको 24 घण्टे गुरू का ध्यान रहेगा, तो आप हमेशा, आनंद में रहेंगे। हमेशा खुश रहेंगे।

राधास्वामी ने बताया, नाम लेने की विधि।।

राधास्वामी बोलते हैं संत सतगुरू वक्त, जो आज आपके सामने बैठा है। जो आपको राधास्वामी बताएगा, उस पर चलो। गुरू सबको अलग–2 सलाह बताएगा। एक सेठ गया परमदयाल जी के पास। महाराज जी मेरे पास सबकुछ है लेकिन मन की शांति नही है। तो महाराज जी ने पूछा तुम्हारे परिवार में कौन–2 हैं। उसने कहा एक भाई है, उसकी 4 बेटियाँ हैं। वो बहुत गरीब है। तो महाराज जी ने कहा तुम एक–2 करके अपनी चारों बेटियों की शादी कर दो। तुम्हारे मन में शांति आ जाएगी। उसने ऐसा ही कहा और उसके मन में शांति आ गई। तो परमदयाल जी महाराज ने उसको यह नामदान दे दिया था, कि अपने भाई की लड़कियों की शादी कर दो। उसने बात मान ली और वो तर गया। तो गुरू नब्ज देखकर दवाई बताता है। और जिसने गुरू की बात मान ली, वो तर गया।

राधास्वामी।